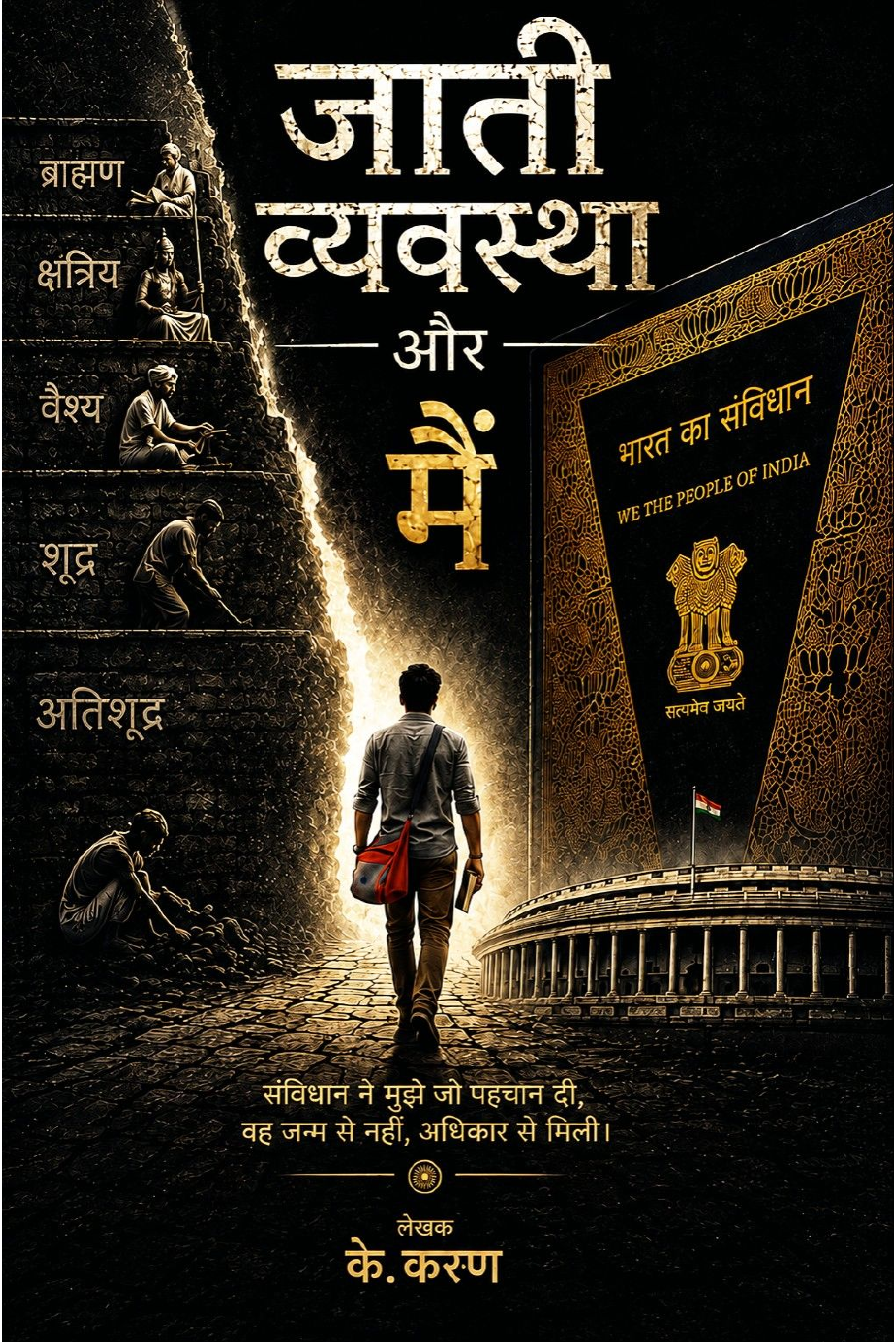
जाती व्यवस्था
और
मैं



संविधान ने मुझे जो पहचान दी,
वह जन्म से नहीं, अधिकार से मिली।

लेखक
के. करुण

जति
व्य
व
स
स
था

और

मैं

लेखक

के. करण

यह किताब वह आईना है,
जिसमें हम स्वयं को देख सकते हैं।

इसके पन्नों में उस सफ़र की झलक है,
जहाँ हज़ारों वर्षों से जाति ने
मानवता को रौंदा है।

यह किताब सवाल भी है, जवाब भी है,
और एक उम्मीद भी—कि
एक दिन हम सबकी पहचान
सिर्फ़ इंसानियत से होगी,
किसी जाति से नहीं।

लेखक

के. करण